ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 15 अंक-16 नवम्बर-II, 2014 पाक्षिक माउण्ट आबू ₹ 8.00

जीवन को रोशन करता पर्व 'दीपावली'

शांतिवन। दीपराज परमात्मा की याद से सभी की आत्म-ज्योति जगे हुए दीपक समान चमक बिखेरती रहे, यही दिवाली पर्व पर ईश्वरीय वरदान है। हम सभी खुश रहें व सभी को खुशियां बांटते रहें, यही जीवन में आगे बढ़ने का साधन है। मिट्टी के दीये जलाने से तो बाह्य अंधकार दूर होता है लेकिन आत्मा का दीप जगाने से आंतरिक कालिमा दूर हो जाती है। दीपावली मन की मलिनता को मिटाकर मन को सुमन बनाने का पर्व है। आत्म-दीप जलाने से आत्मा दु:ख-दरिद्रता से मुक्त हो जाती है।

दीपावली पर्व पर दीप प्रज्वलित करते हुए दादी हृदयमोहिनी, दादी जानकी, दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु. मुन्नी, ब्र.कु. मोहिनी, ब्र.कु. डॉ. निर्मला, ब्र.कु. निर्वैर, ब्र.कु. रमेश शाह तथा अन्य।

उक्त विचार ब्रह्माकुमारी संस्था की अति.मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी ने डॉयमण्ड हॉल परिसर में देश-विदेश से दिवाली मनाने आए हजारों ब्रह्मा वत्सों को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि खुशी का खजाना ही सर्वश्रेष्ठ खजाना है इसे संभालना है। कोई भी बात आपकी खुशी को दूर न ले जाये। आध्यात्मिक प्राप्तियों की राह में विभिन्न प्रकार के पेपर आते हैं लेकिन जो अच्छे पुरूषार्थी होते हैं वह सदा पास होते हैं। खुश रहने वाले ही आगे से आगे कदम बढ़ाते रहते हैं। परमात्म प्यार व वरदानों से हमारी दिल भरपूर है क्योंकि हमारे दिल में एक परमात्मा की याद बसती है। किसी भी चीज में यदि मेरापन है तो वह सदैव याद रहती है अत: हम शिव बाबा को अपना बनाएं।

ब्रह्माकुमारी संस्था की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी ने कहा कि ये भारत की प्राचीन संस्कृति वाले हर पर्व से वसुधैव कुटुम्बकम की भावना को बल मिलता है। भारत एक समय अत्यधिक सुखी व सम्पन्न था कि जब हर घर में घी के दीप जलाए जाते थे। इस सम्पन्नता का कारण था कि उस समय के लोग सत्कर्म में स्थित थे, सतोगुणी स्वभाव वाले थे और उनका खाना-पीना तथा रहना-करना दैवी मर्यादा के अनुसार था। आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा उनकी आत्मा रूपी ज्योति जगी हुई थी इसलिए दु:ख-अशांति का वहाँ नामोनिशान नहीं था। लेकिन आज जो गरीबी व अशांति छायी हुई है उसका कारण ही यह है कि आज मानव तमोगुणी हो गया है उसके कर्मों में गिरावट आ गई है। आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा मनुष्यों के मन रूपी मंदिर स्थापना हो जाए। ब्रह्माकुमारी संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी ने कहा कि परमपिता परमात्मा की याद द्वारा मन की सफाई, ज्ञानामृत द्वारा बुद्धि की शुद्धि और स्वयं को आत्मा निश्चय करने से ही स्वास्थ्य का लाभ होता है। यह वह समय है जब परमपिता परमात्मा स्वयं ज्ञान-घृत द्वारा मनुष्यात्माओं की ज्योति जगा रहे हैं। हम सभी मनुष्य सत्य परमात्मा से सत्य ज्ञान लेकर अपने जीवन को पावन बनायें अर्थात ज्योति जगायें और ईश्वरीय मिलन का वास्तविक सुख प्राप्त करें, तब ही यह संसार फिर से सतयुगी दुनिया में परिवर्तित होगा और श्री लक्ष्मी व श्री नारायण का फिर से राज्य होगा।

दीपावली कार्यक्रम में सांस्कृतिक प्रस्तुति देते हुए रशिया की बहनें।

डायमण्ड हॉल में सौ देशों से आये भाई-बहनों ने मिलकर मनाया दीपावली का पर्व।

भी सफाई करने से श्री लक्ष्मी प्रसन्न होती हैं। कमल सदृश बन कर हम कमला को प्राप्त कर सकते हैं।

ब्र.कु.मोहिनी ने कहा कि अब आसुरी अवगुणों का पुराना खाता बंद कर दैवी गुणों के लेन-देन का खाता खोलें तभी जीवन में सच्ची सुख-शांति-समृद्धि का उजाला बिखरेगा।

ज्ञानसरोवर परिसर की निदेशिका ब्र.कु.निर्मला दीदी ने कहा कि आत्म-ज्योति जगाने के लिए हमें आत्म-ज्ञान की आवश्यकता है। साथ-साथ इस बात की भी आवश्यकता है कि हम भौतिकता के दास न बनें। हम सभी आत्म-दीप में ज्ञान का घृत डालकर उसकी आत्म ज्योति को और अधिक उज्जवल बनाएं।

ब्र.कु.मुन्नी ने कहा कि जब तक सभी दीपक न जलें, दीपमाला नहीं बनती। दिवाली भी हमें यही संदेश देती है कि सभी जगमगाते हुए आत्म-दीप बनकर एक माला में पिरो दिए जाएं।

मल्टी मीडिया के अध्यक्ष ब्र.कु.करूणा मिठाई खाने के साथ मुख को भी मीठा करें -कड़ुवा हो मुख तो मिठाई भी क्षणिक स्वाद ही देगी। मुख को मीठा बना लें, तो जीवन ही मिठास से भर जाएगा। मिठाई खाते हुए मीठी वाणी बोलकर सभी को सुख देने का भी संकल्प करें।

न्यूयार्क से आई ब्र.कु.मोहिनी, लंदन से ब्र.कु.जयंती, जर्मनी से ब्र.कु.सुदेश, रशिया से ब्र.कु.सुधा व ब्र.कु.संतोष ने भी कार्यक्रम को सम्बोधित किया। सभी ने दीपराज परमात्मा शिव